❍ 29 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बाप की आज्ञाओं का उल्लंघन तो नहीं किया ?*

➢➢ *ज्ञान अमृत पीते रहे ?*

➢➢ *विनाश के पहले एवररेडी रहे ?*

➢➢ *निर्मल स्वभाव से हर कदम में सफलता प्राप्त की ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। *कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे-इसको कहते हैं कर्मातीत।* कर्मयोग की स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है। *यह कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी स्थिति है, इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य, मेहनत का हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं|*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं पदमों की कमाई जमा करने वाली अखुट खजानों का मालिक हूँ"*

〰✧ *हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाले, अखुट खजाने के मालिक बन गये। ऐसे खुशी का अनुभव करते हो! क्योंकि आजकल की दुनिया है ही - 'धोखेबाज'। धोखेबाज दुनिया से किनारा कर लिया।*

〰✧ *धोखे वाली दुनिया से लगाव तो नहीं! सेवा अर्थ कनेक्शन दुसरी बात है लेकिन मन का लगाव नहीं होना चाहिए। तो सदा अपने को तुच्छ नहीं, साधारण नहीं लेकिन श्रेष्ठ आत्मा हैं, सदा बाप के प्यारे हैं, इस नशे में रहो।*

〰✧ *जैसा बाप वैसे बच्चा - कदम पर कदम रखते अर्थात् फालो करते चलो तो बाप समान बन जायेंगे। समान बनना अर्थात् सम्पन्न बनना। ब्राह्मण जीवन का यही तो कार्य है।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *ब्राह्मण बने, बाप के वर्से के अधिकारी बने, गॉडली स्टूडेन्ट बने, ज्ञानी तू आत्मा बने, विश्व सेवाधारी बने* - यह भाग्य तो पा लिया लेकिन अब पास विद ऑनर होने के लिए कर्मातीत स्थिति के समीप जाने के लिए ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन।

〰✧ जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले 'न्यारे और प्यारे' रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। जो सभी बच्चे अनुभव सुनाते हो - सुनते हुए न्यारे, कार्य करते हुए न्यारे, बोलते हुए न्यारे रहते थे। सेवा को वा कोई कर्म को छोडा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। *न्यारा-पन हर कर्म मे सफलता सहज अनुभव कराता है।* करके देखो।

〰✧ एक घण्टा किसको समझाने की भी मेहनत करके देखो और उसके अन्तर में *15 मिनट में सुनाते हुए, बोलते हुए न्यारे-पन की स्थिति में स्थित होके दूसरी आत्मा को भी न्यारे-पन की स्थिति का वायवेशन देकर देखो।* जो 15 मिनट में सफलता होगी वह एक घण्टे में नहीं होगी। यही प्रैक्टिस ब्रह्मा बाप ने करके दिखाई। तो समझा क्या करना है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जो बापदादा कहते हैं, चाहते हैं सेकण्ड में अशरीरी हो जायें - उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है, नहीं तो कितनी भी कोशिश करेंगे लेकिन सेकण्ड में नहीं हो सकेंगे। युद्ध में ही चले जायेंगे और जहाँ वैराग्य है तो ये वैराग्य है योग्य धरनी, उसमें जो भी डालो उसका फल फौरन निकलता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक दिन भी पढ़ाई मिस नही करना,पढ़ लिखकर, नवाब बनना*"

➳ _ ➳ ईश्वर शिक्षक के जीवन में आने से... खुशियो में खिले,अपने जीवन में, दिव्य गुणो की सुगन्ध का, आनन्द लेते हुए मै आत्मा... सोचती हूँ कि,

देहभान की डाली पर बेठी हुई मै आत्मा... अहंकार और विकारो की मूर्खता से भरी हुई... कैसे अपनी सांसो की डाली को, कालिदास जैसा काट रही थी... कि प्यारे बाबा ने मुझे आसमाँ से निहार कर... *मेरे कल्याण के लिए धरती पर पग धरे... अपनी अमूल्य शिक्षाओ को देकर, मुझे महान बनाया... ज्ञान सरस्वती को मेरे मन बुद्धि रुपी मुख में बिठाया.*.. और मुझे दिव्यता और पवित्रता से सजाकर, कितना प्यारा और महान बना दिया है... *कभी अपनी ही जड़ो को काटने वाली मै आत्मा... आज सृष्टि कल्प व्रक्ष की जड़ो में तपस्या में लीन हूँ.*.. और मेरा भविष्य नवाबो सा सजा धजा है... यही मीठी गुफ्तगू प्यारे बाबा को सुनाने मै आत्मा... मीठे बाबा के कमरे में पहुंचती हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी ज्ञान सम्पत्ति को देते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता को टीचर रूप में पाने वाले, और उनकी सारी ज्ञान सम्पदा से सजने वाले, महान भाग्यशाली हो.*.. अपने इस महान भाग्य के नशे में सदा झूलते ही रहो... एक दिन भी यह अमूल्य पढ़ाई मिस न करो... यह पढ़ाई ही सारे सच्चे सुखो का आधार है... यह सच्ची पढ़ाई ही सतयुग में नवाब पद दिलायेगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से सतयुगी नवाब सजते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा देह के भान में कितनी गरीब, कितनी मायूस थी,.. सदा खुशियो को तरसती, दूसरो में खोजती रही... *आपने प्यारे बाबा मुझे ज्ञान धन से मालामाल कर, राजरानी सा सजाया है... मेरे ही भीतर ख़ुशी का अनवरत झरना दिखाया है.*.. मै आत्मा अब आपके मीठे प्यार में सतोगुणी बनकर... सतयुगी नवाब बन रही हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी जागीरे, दौलत मुझे सुपुर्द करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा से ज्ञान रत्नों की सारी सम्पत्ति को लेकर... 21 जनमो तक स्वर्ग का राज्य भाग्य पाओ... *सदा गॉडली स्टूडेंट बनकर, ज्ञान रत्नों संग रमण करते रहो... यही ज्ञान रत्न, असीम सुखो में बदलकर, विश्व का मालिक सजायेंगे.*.. परमधाम से ईश्वर, शिक्षक

बनकर,पढ़ाने आया है तो... यह पढ़ाई एक दिन भी मिस नही करनी है..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से अतुलनीय धन को दिल में समेटते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... आपने मुझ आत्मा के जीवन को... सदा के लिए सुखो में आबाद किया है... दिव्य गुणो शक्तियो और पवित्रता से सजाकर, मुझे देवताई रूप दिया है... मै आत्मा दुखो की गरीबी से निकलकर... सुखो की अमीरी से भर रही हूँ... *मुझे देवता बनाने वाली, बेशकीमती पढ़ाई को एक दिन भी मिस नही करती हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी खानों और खजानो का मालिक बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता अपनी सारी दौलत, अमीरी,अथाह खजाने सब आप बच्चों के लिये ही लाया है... सारी खानों पर अपना अधिकार जमा लो... सारे सुख अपनी बाँहों में सजा लो... *भगवान से सब कुछ प्राप्त कर... देवताओ की खुबसूरत दुनिया में नवाब बनकर मुस्कराओ*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के इस कदर उपकारों में अभिभूत होकर कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे दुलारे बाबा... मै आत्मा ईश्वर टीचर से पढ़ने वाली महान भाग्यशाली गॉडली स्टूडेंट हूँ... हर पल, हर साँस, ज्ञान रत्नों से खेलकर सदा के लिए अमीर बन रही हूँ... *ईश्वरीय शिक्षाओ ने मेरे जीवन को खुबसूरत आयाम दिए है... श्रीमत ने जीवन को खुशहाल और सुखी बनाया है... और पवित्रता ने मेरा खोया गौरव पुनः दिलवाया हे.*.."मीठे बाबा से कभी पढ़ाई मिस नही करने का वादा करके मै आत्मा साकारी तन में आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रोज मुरली जरूर पढ़नी वा सुननी है*"

➳ _ ➳ अपने शिव प्रीतम की प्रेम भरी पाति को जो मुझे हर रोज मुरली के माध्यम से प्राप्त होती है। जिसमे लिखे एक - एक शब्द में मेरे शिव प्रीतम का मेरे प्रति अथाह प्रेम समाया होता है, उस प्रेम भरी पाति को पढ़ कर मैं आत्मा सजनी अपने शिव प्रीतम के प्रेम की गहराई में डूबती जा रही हूँ। *मुरली के एक - एक शब्द में अपने प्यारे मीठे बाबा की मीठी याद को मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ*। बाबा की मीठी याद प्रेम की मीठी मीठी फुहारों के रूप में मुझे अपने ऊपर बरसती हुई महसूस हो रही है जो मुझे एक बहुत ही न्यारी और प्यारी अवस्था की अनुभूति करवा रही है। *यह न्यारी और प्यारी अवस्था मुझे देह और देह की दुनिया के हर लगाव से मुक्त कर रही है*।

➳ _ ➳ देह और देह की दुनिया के आकर्षण से मुक्त, अशरीरी स्थिति में मैं स्थित होती जा रही हूँ। इस स्थिति में स्थित होते ही मेरे शिव पिता परमात्मा का प्रेम चुम्बक की तरह मुझे अपनी ओर खींच रहा है। *अपने शिव प्रीतम के प्रेम की लग्न में मग्न हो कर मैं आत्मा सजनी विदेही बन, अपनी इस नश्वर देह का परित्याग कर चल पड़ी उनसे मिलने उनके ही धाम, परमधाम की ओर*। परमधाम से अपने ऊपर पड़ रही अपने शिव प्रीतम के प्रेम की मीठी - मीठी फुहारों का आनन्द लेती हुई मैं साकार लोक और सूक्ष्म लोक को पार करके, अब पहुंच गई अपने शिव परम पिता परमात्मा के पास उनके निराकारी लोक में।

➳ _ ➳ अब मैं स्वयं को आत्माओ की एक ऐसी निराकारी दुनिया मे देख रही हूँ जहां देह और देह की दुनिया का संकल्प मात्र भी नही। *हर तरफ चमकते हुए सितारे दिखाई दे रहें हैं और उन सभी चमकते सितारों के बीच मे एक चमकता हुआ ज्योतिपुंज अपनी सर्वशक्तियों से पूरे परमधाम को प्रकाशित करता हुआ दिखाई दे रहा हैं*। उस ज्योतिपुंज शिव परम पिता परमात्मा से निकलने वाली अनन्त किरणों का प्रकाश आत्मा को तृप्त कर रहा है। *उस प्रकाश में सातों गुण और अष्ट शक्तियों का समावेश है जो शक्तिशाली

वायब्रेशन के रूप में पूरे परमधाम में फैल रहा है*। ये शक्तिशाली वायब्रेशन आत्मा को उसके ओरिजनल स्वरूप के स्थित करके उसे गहन सुख, शांति की अनुभूति करवा रहें हैं।

➳ _ ➳ अपने शिव प्रीतम के सानिध्य में बैठ, उनके प्रेम से, उनके गुणों और उनकी शक्तियों से स्वयं को भरपूर करके अब मैं आत्माओं की निराकारी दुनिया से नीचे आकर, फ़रिशतो की आकारी दुनिया मे प्रवेश कर रही हूँ। *अपने शिव प्रीतम की प्रेम भरी पाति को उनके ही मुख कमल से सुनने के लिए अब मैं अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप को धारण कर पहुंच जाती हूँ उनके सम्मुख*। मेरे बिल्कुल सामने मेरे प्रीतम शिव बाबा अपने अव्यक्त आकारी रथ ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में विराजमान है। *ब्रह्मा मुख कमल से मेरे शिव साजन मीठे मधुर महावाक्य उच्चारण करते हुए, मुझ आत्मा सजनी से मीठी रूह - रिहान करते हुए अपनी प्रेम भरी दृष्टि से मुझे निहार रहें हैं*।

➳ _ ➳ अपनी मीठी मधुर दृष्टि से मुझे भरपूर करके अब मेरे शिव प्रीतम ब्रह्मा मुख कमल द्वारा उच्चारित प्रेम भरे मधुर महावाक्यों को मुरली के रूप में मुझे भेंट कर अपने धाम लौट रहे हैं। *मैं आत्मा अपने प्यारे शिव परम पिता परमात्मा की उस प्रेम भरी पाति को अपने साथ लिए अब वापिस अपनी साकारी दुनिया मे लौट रही हूँ*। अपने निराकार स्वरूप में अब मैं आत्मा अपने साकारी तन में प्रवेश कर रही हूँ और फिर से अपने अकाल तख्त पर आकर विराजमान हो गई हूँ।

➳ _ ➳ अपने शिव प्रीतम की प्रेम भरी पाति को अब हर रोज मुरली के माध्यम से पढ़ कर, स्वयं को उनके प्रेम से भरपूर कर मैं आनन्द विभोर हो जाती हूँ। *मुरली में लिखे मेरे शिव प्रीतम के मधुर महावाक्य मुझे माया के हर तूफान से लड़ने का बल देते हैं*। अपने शिव प्रीतम के प्रेम पत्र मुरली को अपने दिल से लगाये, उनके प्रेम में खोई मैं हर बात से जैसे उपराम हो गई हूँ और इसी उपराम स्थिति ने मुझे मायाजीत बना दिया है।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं विनाश के पहले एवररेडी रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं समान और सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव अपने स्वभाव को निर्मल बनाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अपने हर कदम में सफलता को समा लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सफलतामूर्त हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ ➳ 1. स्नेह ऐसी शक्ति है जो सब कुछ भुला देती है। न देह याद

आती, न देह की दुनिया याद आती। स्नेह मेहनत से छुड़ा देता है। *जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती है। स्नेह सदा सहज बापदादा का हाथ अपने ऊपर अनुभव कराता है*। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है। कितनी भी बड़ी समस्या रूपी पहाड़ हो, स्नेह पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देता है।

➳ _ ➳ 2. *बाबा, बाबा और बाबा.... एक ही याद में लवलीन रहे*। तो बापदादा कहते हैं और कोई पुरुषार्थ नहीं करो, स्नेह के सागर में समा जाओ।

➳ _ ➳ 3. *समाये रहो, तो स्नेह की शक्ति सबसे सहज मुक्त कर देगी*।

➳ _ ➳ 4. स्नेह सहज ही समान बना देगा क्योंकि *जिसके साथ स्नेह है उस जैसा बनना, यह मुश्किल नहीं होता है*।

✺ *ड्रिल :- "स्नेह के सागर में समा, स्नेह की शक्ति का अनुभव"*

➳ _ ➳ आराम की मुद्रा में, एकांत में बैठ, अपनी पलके मूंदे, मैं अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं और रोज़मर्रा की परिस्थितियों के बारे में विचार कर रही हूँ। *तभी मुझे अनुभव होता है कि जैसे मैं एक रास्ते पर बड़े आराम से चलते हुए कहीं जा रही हूँ और अचानक चलते चलते मेरे सामने एक पहाड़ आ जाता है और आगे जाने का रास्ता बंद हो जाता है*। इसलिए जैसे ही मैं वापिस पीछे मुड़ती हूँ तो देख कर हैरान रह जाती हूँ कि पीछे भी एक बहुत ऊंचा पहाड़ है। मेरे दाएं ओर बायें तरफ के भी दोनों रास्ते बंद है। चारों तरफ से बाहर निकलने का अब कोई रास्ता मुझे दिखाई नही दे रहा। *घबरा कर बाहर निकलने के लिए मैं ज़ोर - ज़ोर से चिल्ला रही हूं किन्तु वहां मेरी आवाज़ सुनने वाला कोई भी नही*।

➳ _ ➳ जब कहीं से कोई मदद मिलने की आश नही रह जाती तो मुख से स्वत: ही निकलने लगता है, हे भगवान मुझे बचाओ। भगवान को पुकारते - पुकारते अपने घुटनों में सिर रख कर मैं रो रही हूं। *तभी जैसे कानों में एक मधुर आवाज सुनाई देती है,बच्चे:- "मैं हूँ ना"। इस आवाज के साथ - साथ

बहुत तेज प्रकाश मेरे चारों तरफ फैल जाता है*। और वो प्रकाश अपनी किरणों रूपी बाहों में मुझे उठा कर उस पहाड़ को पार करवा देता है।

➳ _ ➳ तेज प्रकाश की चकाचौंध से मेरी बन्द आंखे अपने आप खुल जाती हैं। सामने लाइट माइट स्वरुप में बापदादा को देख कर मैं अचंभित हो कर बाबा की और देखती हूँ और मेरे मुख से निकलता है, "बाबा वो पहाड़"। *बाबा मुस्कराते हुए कहते हैं, बच्ची:- "वो पहाड़ नही थे"। वो तो जीवन में आने वाली छोटी - छोटी परिस्थितियां है, जिन्हें तुम सोच - सोच कर पहाड़ जैसा बना देते हो*।

➳ _ ➳ *आओ, मेरे बच्चे:- "अपनी लाइट माइट से मैं तुम्हे इतना शक्तिशाली बना देता हूँ कि जीवन में आने वाली ये परिस्थितियां पहाड़ से राई बन जाएंगी"। फिर तुम इन्हें जम्प देकर सेकेंड में पार कर जाओगे*। यह कहकर बाबा अपनी शक्तिशाली किरणों को जैसे ही मुझ पर प्रवाहित करते है। मेरा साकारी शरीर जैसे लुप्त हो जाता है। और बाबा मुझ आत्मा को अपने साथ ऊपर की ओर लेकर चल पड़ते हैं।

➳ _ ➳ लाइट की एक ऐसी दुनिया जहाँ चारों और चमकती हुई मणियां जगमग कर रही है। इस परमधाम घर में बाबा मुझे ले आते हैं। अब मैं बाबा के सम्मुख हूँ। बाबा के साथ अटैच हूँ और उनसे आ रही लाइट, माइट से स्वयं को भरपूर कर रही हूं। उनसे आ रही सर्वशक्तियाँ मुझमें असीम बल भर कर मुझे शक्तिशाली बना रही है। *मैं डबल लाइट बनती जा रही हूँ। कोई बोझ, कोई बंधन नही। बिल्कुल उन्मुक्त और निर्बन्धन स्थिति में मैं स्थित हूँ*। गहन सुखमय स्थिति की अनुभूति अपने शिव पिता परमात्मा के सानिध्य में मैं कर रही हूं। बाबा की लाइट माइट से भरपूर हो कर डबल लाइट बन कर अब मैं वापिस लौट रही हूं।

➳ _ ➳ अपनी साकारी देह में विराजमान होकर भी अब मैं निरन्तर आत्मिक स्मृति में रहते हुए अपने पिता परमात्मा के स्नेह में सदा समाई रहती हूं। अब मैं एक के स्नेह के रस का रसपान करने वाली एकरस आत्मा बन गई हूं। *देह और देह की दुनिया को अब मैं भूल चुकी हूं। अपने शिव पिता की

मोहब्बत के झूले में झूलते हुए हर प्रकार की मेहनत से अब मैं मुक्त हो गई हूं*। अपनी हजारों भुजाओं के साथ बाबा चलते, फिरते, उठते, बैठते हर कर्म करते मुझे अपने साथ प्रतीत होते हैं।

➳ _ ➳ अब कोई भी परिस्थिति मेरी स्व स्तिथि के आगे टिकती नही। क्योंकि बाबा की छत्रछाया हर परिस्थिति रूपी पहाड़ को पानी जैसा हल्का बना कर मुझे सहज ही उस परिस्थिति से बाहर निकाल लेती है। बाबा के प्रेम का रंग मुझ पर इतना गहरा चढ़ चुका है कि *सुबह आंख खोलते बाबा, दिन की शुरुआत करते बाबा, कर्मयोगी बन हर कर्म करते एक साथी बाबा, दिन समाप्त करते भी एक बाबा के लव में लीन रहने वाली लवलीन आत्मा बन गई हूं*। स्नेह के सागर में सदा समाये रहने के अनुभव ने मुझे याद की मेहनत से मुक्त कर सहजयोगी, स्वत:योगी और निरन्तर योगी बना दिया है।

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔